RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 11 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 18 अगस्त 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

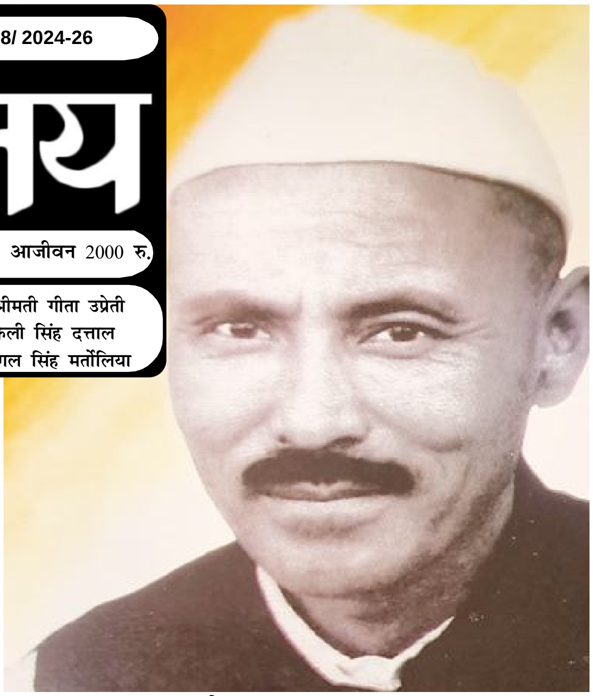

पूज्य पिताश्री की याद में....

स्वतंत्रता की 79 वीं वर्षगांठ पर

इन्द्रा पांगती

इस संसार में हमें परिवार के सदस्यों के रूप में जो विभूतियां आत्माएं मिलती हैं वे हमारे पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम होते हैं। यह मेरे पूर्वजन्मों का सुफल था कि मुझे पिता के रूप में श्री जगत सिंह पांगती प्राप्त हुए। मैंने जब से होश सम्भाला, तब से उन्हें सच्चे अर्थों में एक आदर्श पिता कुशल पथप्रदर्शक एवं जनसेवक के रूप में पाया है। पिता के सानिध्य में जो अनुभव मैंने आत्मसात किया है तथा अन्य लोगों से उनके बारे में सुना है उसकी कुछ स्मृतियां यहाँ व्यक्त करने का अल्पप्रयास कर रही हूँ।

जैसा कि सभी जानते हैं कि बाल्यकाल से ही आप अत्यन्त विलक्षण प्रतिभा से युक्त बालक थे। आप बचपन से ही नाटकों आदि में जोगी, सन्यासी की भूमिका बखूबी निभाते थे, जिससे उनके अन्दर त्याग, तपस्या, दया जैसे सकारात्मक मूल्यों की छवि पड़ी। वे मेधावी छात्र रहे। गहन अध्ययन चिन्तन, मनन उनकी सफलता का मूल मंत्र रहा। उनके बारे में कहा जाता है कि वे विद्यालय से आकर पूर्ण विश्राम करते थे। लोगों को यह आश्चर्य होता था कि यह बालक इतने अच्छे अंकों से कैसे उत्तीर्ण होता है, पूछने पर एक बार उन्होंने बताया था कि वे विद्यालय से घर आकर दिनभर की पढ़ाई का पुन: स्मरण, मनन एवं पुनरावृत्ति आँखें मूंदकर मन ही मन किया करते थे। इस एकाग्रता एवं तीव्र स्मरण शक्ति के परिणामस्वरूप ही उन्हें मिडिल एवं हाईस्कूल परीक्षा में अव्वल आये और मैरिट छात्रवृत्ति मिली। अव्वल आने की यह कला आजकल के छात्र एवं युवाओं के लिए मार्गदर्शक होगा।

एक मैरीटोरियस छात्र होते हुए भी आगे की शिक्षा छोड़कर देश सेवा, समाज सेवा के क्षेत्र में जाना तत्कालीन देश में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रभाव रहा। इसके अलावा बचपन से उनके अन्दर निहित सेवाभाव, त्याग एवं देशसेवा की भावना राष्ट्रपिता बापूजी एवं विनोबा भावे के सिद्धान्तों से प्रभावित होना रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द जी की जीवनी व विचारों का अध्ययन, मनन करने से उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ने से वे इस मार्ग की ओर प्रशस्त हुए। इस महान कार्य को प्रशस्त होने के लिए आपको अपने अग्रज भ्राता स्व. भगत सिंह का पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला। सूफी सन्तों, कवियों के दोहों एवं कविताओं में उनकी गहरी रूचि थी। कवि रहीम एवं कबीर के दोहों में निहित विचार एवं भावों से आप अत्यन्त प्रभावित थे। नैतिकता, दया, सहिष्णुता अर्थात सम्पूर्ण मानवीय नैतिक गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति थे।

श्रीमद्भागवत गीता के ज्ञान की भी आपके व्यक्तित्व में गहरी छाप पड़ी। गीता के ज्ञान एवं जिस पर चिन्तन मनन करने से और अपने दैनिक जीवन व्यवहार में उसका अमल करने के कारण उनकी जीवन शैली पूर्णत: बदल गई थी। आप गीता का पाठ करते थे। उन्हें गीता के सम्पूर्ण श्लोक अर्थ सहित कण्ठस्थ थे। समय-समय पर जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थितियों में तद्नुरूप गीता के श्लोक सुनाकर लोगों को अर्थ

शेष पृष्ठ 2 पर

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जगत सिंह पांगती के नाम से होगी थल जीजीआईसी की पहचान

स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में उत्तराखण्ड का योगदान हमेशा याद किया जायेगा। अपने प्राणों की परवाह किए बगैर हमेशा देश के लिये लड़ने वाले सैनिकों को देने वाले उत्तराखण्ड ने स्वतंत्रता के आन्दोलन में जिस प्रकार से भागीदारी की उसमें हमारे सीमान्त क्षेत्र से तक समाजसेवी और देश के लिये मर-मिटने वाले सेनानी अग्रणीय रहे हैं। इन्हीं में से एक थे- स्व. जगत सिंह पांगती। परम देशभक्त एवं महान समाजसेवी स्व. पांगती की स्मृति में ज्योग्यूड़ा, थल में 'स्मृति पार्क' भी है। इस स्मारक निर्माण एवं सौन्दर्यीकरण के लिये पूर्व मुख्य सचिव आईएएस एन.एस. नपलच्याल ने शासन स्तर से मदद करवाई थी। स्मारक के शुभारम्भ अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जगत सिंह जी के समस्त कुटुम्बजन थल में जुटे थे। इस बार स्वतंत्रता दिवस से पूर्व प्रदेश सरकार ने शासनादेश जारी कर दिया है कि जीजीआईसी थल का नाम अब जगत सिंह जी के नाम पर होगा। इससे क्षेत्रवासियों में खुशी का माहौल है।

30 जून 1908 को मिलम (भारत-तिब्बत सीमान्त गाँव) में पिता स्व.खड्गराय पांगती माता स्व. भवानी पांगती के घर जन्मे जगत सिंह जी ने 1923 में मिडिल परीक्षा मेरिट में प्रथम स्थान के बाद 1927 में यूपी बोर्ड हाईस्कूल परीक्षा प्रथम श्रेण एवं मेरिट सूची में तृतीय स्थान प्राप्त किया था। विलक्षण प्रतिभा के पांगती जी 'साईमन कमीशन लौट जाओ' आन्दोलन में सक्रिय थे और सत्याग्रह आन्दोलन में गिरफ्तार हुए। 24 अगस्त को देवीधार दरकोट मुनस्यारी मेले में तिरंगा फहराकर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का शंखनाद करने वाले इस नायक का स्मरण करते हुए 2025 के स्वतंत्रता दिवस पर उनकी पुत्री इन्द्रा पांगती की लेखनी के साथ पिघलता हिमालय के इस अंक के द्वारा याद किया जा रहा है।

भारत के मीलपत्थर

कितने विनम्र थे अंजनिपुत्र हनुमान

सूर्यकान्त बाली

जो हनुमान अपने आराध्य राम की तरह अपने भक्तों के द्वारा दिन-रात पूजे जाते हों, हर मंगलवार को जिनकी स्तुति में सारे भारत में विशेष पूजा-अर्चनाएं होती हों, उन पवनपुत्र हनुमान को भारत के मीलपत्थरों में गिनकर आखिर हम साबित क्या करना चाहते हैं? भारत की सभ्यता के विकास में उनका कौन-सा योगदान हम बताना चाहते हैं, जो हनुमान के करोड़ों भक्तों को पहले से ही नहीं मालूम? बल्कि हालत तो ठीक इससे उलट हैं। हमारे इतिहास पुराण ग्रन्थों के कथा-विवरणों के आधार पर हम अपने अनेक पात्रों के बारे में कई तरह की जानकारियां इकट्ठा करने में लगे रहते हैं, जबकि हनुमान का चरित्र कुछ ऐसा विशिष्ट है, उनके भक्तों ने उन्हें इतना ऊँचा आसन दे दिया है कि बेचारे पुराणकार हनुमान की इस ऊँचाई को नापने के लिए कई तरह की कथाओं, गाथाओं की गलियों में भटकते रहते हैं, पर नाप नहीं पाते, हनुमान को उनकी पूरी विराटता के साथ ढूंढ नहीं पाते। एक सीधे सादे चरित्र के साथ किस कदर खिलवाड़ की जा सकती है, उसी का नमूना हनुमान का चरित्र है, जो हमारे पुराणकारों ने शास्त्रीय बनाने के फेर में हद दर्जे तक उलझा दिया है, जबकि लोगों के स्तर पर हनुमान का चरित्र अत्यन्त लोकप्रिय, अत्यन्त मनोहारी ओर परम आराध्य रामभक्त का है। इसमें मजेदार यह है कि लोगों ने इस बात की परवाह नहीं की कि हनुमान को शास्त्रीयता देने के प्रयास में पुराणों ने हनुमान का सारा चरित्र कितना ऊपर नीचे कर दिया है। उन्हें तो बस उस हनुमान का पता है, जो अंजनिपुत्र हैं, केसरीनन्दन हैं, ज्ञान गुणसागर हैं, गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में 'ज्ञानिनामग्रगण्य' (ज्ञानियों में अग्रणी) हैं, जिन्होंने राम का दूत बनकर सीता की खोज में समुद्र लांघ दिया, लंका को जला दिया और लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा के लिए जो हिमालय से एक खास संजीवनी बूटी न मिल पाने के कारण पूरी पर्वतशिला ही अपने हाथों में उठाकर ले आये थे। पुराण चाहे जो कहते-लिखते रहें, लोगों को तो इस बात में अटूट निष्ठा है कि हनुमान का नाम लेते ही सारे भूत-पिचाश अपना रास्ता नाप लेते हैं और सारे विघ्न क्षणभर में छूमन्तर हो जाते हैं। जो हनुमान इस हद तक लोगों को अपनी आराधना से जोड़ चुके हैं, वे चंकि असामान्य ही होने चाहिए, इसलिए पुराणकार उनकी असामान्यता के कारण तलाशने में लग गये। कहीं उन्हें प्रकारान्तर से शिव की सन्तति माना गया तो कहीं उनका जन्म उस पायस खीर के एक अंश से जोड़ दिया गया, जो दशरथ को अग्निदेव ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ के बाद दी थी। कहीं उन्हें रुद्र का अंशावतार सिद्ध करने के लिए विचित्र कथायें सोची गईं तो कहीं उनको वेदों के मरुत् देवताओं का उत्तराधिकार प्रदान कर इनकी महती बलशीलता का रहस्य ढूंढा गया।

पर हनुमान इस तमाम कथाओं से ऊपर हैं। इन कथाओं को उनके व्यक्तित्व ने वैसे ही लांघ लिया है, जैसे खुद हनुमान ने समुद्र लांघकर उस पार जा छलांगे थे। यह देश तो क्या किसी भी देश की जनता अपने किसी भी नायक महानायक को बिना वजह याद नहीं करतीं, पूजने का तो सवाल ही नहीं उठता। हनुमान जिस अद्भुत चरित्र से, जिस अद्भुत योगदान से, अपनी आज की भाषा में कहें तो भारतीय सभ्यता को उनके किए योगदान से इस देश का हर नरनारी, हिमालय से रामेश्वरम् तक हर नरनारी प्रभावित है। हनुमान पर फिदा है, वह है उनका दास्य भाव। जैसे श्रमणी शबरी ने प्रपत्तिभाव का परिचय इस देश की जनता को दिया, वैसे ही अनुमान ने भक्ति के दास्य भाव से हम लोगों को परिचित करवाया। यह दीगर है कि भक्ति की ये दोनों अवस्थाएं दक्षिण भारत के पश्चिमी हिस्से में विकसित हुई और आज से छह हजार साल पहले एक साध्व्ह इनका बीजारोपण हुआ। भक्ति के दास्य भाव से परिचित कराने वाले इस महावानर महानायक का जन्म किसी चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को माना जाता है। ऐसे हनुमान सुमेरु पर्वत के प्रख्यात वानरश्रेष्ठ केसरीके पुत्र और उनकी पत्नी अंजनी या अंजना के, जो गौतमकन्या थी, जाये थे। वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड की एक कथा (सर्ग 66) के अनुसार केसरी की पत्नी अंजना को वायुदेव के वरदान से हनुमानजी की वायु के मानसपुत्र के रूप में प्राप्ति हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे आगे चलकर कुन्ती और माद्री को सूर्य, धर्मराज, वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमारों के मानसपुत्रों के रूप में कर्ण सहित छह पुत्रों की प्राप्ति हुई थी।

पर दास्य भक्ति के प्रवर्तक और खुद ही उसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बन चुके हनुमान को आप कोई छोटा-मोटा वानर कहकर वैसे ही खारिज नहीं कर सकते, जैसे एक खास मूर्खता के आवेश में हमारे आज के कुछ अल्पज्ञ पर्यटन-चिन्तक विदेशियों के सामने उन्हें मंकी-गॉड के रूप में 'पेश' कर देते हैं। दास्य भक्ति कोई यूं ही नहीं हो जाया करती। आपको कोई राम जैसे मर्यादापुरुषोत्तम

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

आजाद होकर तो संभल जाओ

आजादी का जश्न पूरे देश और प्रदेश में इस बार भी धूमधाम से मनाया गया। यह खुशी मनाई जानी चाहिये, आंखिर अपने सपने साकार करने के लिये स्वतंत्रता जरूरी है। वर्षों की गुलामी के बाद जब देश आजाद हुआ तो लोगों का एक ही सपना था अपने परिवार, अपने समाज, अपने अपने देश को अपनी परम्पराओं के साथ सीचेंगे। देश में लोकतंत्र की बहार आई और ग्राम स्तर से लेकर देश के सर्वोच्च पदों पर योग्य जन प्रतिनिधियों को अवसर दिया गया। आजादी के वर्ष बीतने के साथ-साथ लोकतंत्र का उत्सव गाढ़ा होता चला गया और जन प्रतिनिधि बनने और बनाने के लिये समाज में जनता की ओर से सवाल उठाए जाने लगे। जनप्रतिनिधि का अवसर किसे दिया जाए, इस बात को लेकर चुनाव में प्रत्याशियों की संख्या बढ़ने लगी और इनकी ओर से जनता को अपने वायदे गिनाए जाने लगे। राज्य और केन्द्र में सत्ता पाने के लिये तो पार्टियों का नेटवर्क ज्यादा सक्रिय हो गया लेकिन अब तो ग्राम स्तर तक भी पार्टियों का जोर ज्यादा होने लगा है। साथ ही दबंगों का प्रयास है कि हर स्तर पर उनका आदमी कुर्सी पर काबिज हो।

जब हम आजाद हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में जनता के पास पूरा अवसर होता है कि वह निर्भीक होकर अपने मत का प्रयोग करे तो फिर चुनाव में इतना हंगामा क्यों? आजादी होकर भी नहीं संभले तो क्या होगा? इसलिये आजादी के पर्व पर आम जनता अपने मन में संकल्प करे कि किसी भी स्तर के चुनाव में वह सच के साथ होंगे। अपने गाँव, शहर, जिला, प्रदेश और देश की खुशहाली के लिये अपने मत का ऐसा प्रयोग करेंगे कि आजादी का मतलब सच हो सके। वरना तो आजाद होकर भी गुलामी हो समझो।

फसक

दाज्यू, आजादी का मतलब खुली छूट मान ली ठैरी

जनता को गजबजाने के लिये खुद भी गजबजी जा रहे हैं बल

दाज्यू, इस बार स्वतंत्रता दिवस से पहले आपदा ने बहुत दु:ख दिया है। क्या करें आपस में दु:ख बांटते हुए आजादी की खुशी भी मना ली। हल्द्वानी महानगर में जलभराव से गुवैन पानी छोलि कर दुकानों में आ रहा है। कचार भरी नाली के ऊपर छोले-गुल्छे का फड़ लग चुका है। मंगल सिंह के ढाबे का चूल्हा भी फुटपाथ पर है। दाज्यू, किसी को कुछ कहने में डर लगता है, आजादी का मतलब खुली छूट जो मान ली ठैरी।

बरसात में भीगते हुए हमने सोचा पटरी पार शहर में चले जाएं। वहाँ चुन्ना, बबली, सोनू, मोनू, लल्लू एक थाली में भात ओलकर खा रहे थे। दाज्यू, फिर वही बात। किसको क्या कहें? आजादी ठैरी। जो जैसा करे करने दो। लल्लू ने उस थाली में पेशाब कर डाली जिसमें सब मिलकर खा रहे थे, सोनू बोला कोई बात नहीं अपना ही है। बबली ने नाच शुरू कर दिया 'मेरा बाबू छैल छबीला मैं तो नाचूंगी...'। दाज्यू, गजब हो रहा ठैरा। बात-बात पर सोनू हंस रहा था तभी बबली ने उसके लट्ठ मारते हुए बोली- 'धारा 0-8ञ्5ण9 के अण्डर च में छ होता है और सेक्रेटी से सुबह ही बात हो गई है। वकील तैयार हैं। पुलिस 50 और डायरेक्टर गो।' दाज्यू, हमारी कुछ समझ नहीं आया कि आंखिर पटरी पार चल क्या रहा है।

दाज्यू, पप्पन को भी नींद नहीं आ रही है। कह रहा था- 'जीत के लिये पंचायत चुनाव में अपहरण कर लिया सालों ने।' वह सपने में भी बोलता रहता है। सुरताल सिंह भी कह रहा था- 'ये सरकार सोनू-मोनू के घोटाले पकड़ नहीं पा रही।' दाज्यू, सुरताल को क्या पता सरकार चलती है और चलाती भी है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

कितने विनम्र थे.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रभु दास के रूप में स्वीकार कर लें, इसके लिए कितने श्रेष्ठ गुणों का पुंज आपको होना पड़ेगा। गुण सारे वही होंगे, जो आपके प्रभु में हैं। बस, अन्तर इतना ही है कि आपने अपने को उस प्रभु का दास मन से स्वीकार कर लिया है यानी राम और हनुमान के चरित्र में कोई अन्तर नहीं, गुणों में कोई फर्क नहीं, महानता में कोई कम-बढ़ नहीं, श्रेष्ठता में कोई ऊँच-नीच नहीं। बस समानधर्मा दो व्यक्तियों में से एक ने अर्थात हनुमान ने दूसरे को अर्थात राम को अपना प्रभु स्वीकार कर लिया है। यही हनुमान का दास्य भाव है, जो भक्ति की कठिनतम और श्रेष्ठतम ऊँचाई मानी जा सकती है। भारत को इतनी ज्यादा सीख देने वाले हनुमान का यह देश भला क्यों न इस कदर दीवाना होगा कि जिस कदर वह है?

रामायण पढ़ते हैं, चित्रों में देखते हैं तो हनुमान हमेशा राम के चरणों में सिर झुकाये खड़े हैं या बैठे हैं, पर वे परम बुद्धिमान हैं, कुशलवक्ता हैं, महावीर हैं, साथ ही अत्यन्त विनम्र हैं, हद दर्जे तक भोले हैं, इस सबके बारे में पढ़ना हो तो आपको वाल्मीकि रामायण पढ़नी होगी, जहाँ अरयणकाण्ड के बाद किष्किन्धा काण्ड के शुरू में ही हनुमान का प्रवेश होता है, जो युद्धकाण्ड के अन्त तक राम के साथ-साथ हैं, सक्रिय हैं। वे एक दूत के रूप में प्रवेश करते हैं और दौत्यकर्म के साथ उनका विवरण रामायण में खत्म हो जाता है। ऋष्यमूक पर्वत में छिपकर बैठे वानरराज सुग्रीव के दूत बनकर वे पहली बार सीता की खोज में भटक रहे राम के सामने आते हैं और अपनी चतुराई से राम और सुग्रीव में जीवन भर की दोस्ती कर देते हैं। वाल्मीकि रामायण में हनुमान का आखिरी बड़ा काम भी दूत का है, जब राम अयोध्या लौटते वक्त उन्हें अपने भाई भरत के पास नन्दिग्राम भेजते हैं ताकि उनके आने की पूर्वसूचना भरत को हो सके। इन दोनों दौत्यघटनाओं के बीच उनका वह विश्वप्रसिद्ध दौत्यकर्म है, जो उन्होंने राम की ओर से सीता की खोज के लिए किया था और जिसके कारण हनुमान का नाम रामदूत पड़

x;kA vi us gj nkSj dk eZ eas guqeku dks
l i Qyrk Hkh feyh vkSj 'kkgkfeyhA t c
fdf"dU/kk dk.M eas gyh dkj osnrw
cu dj lezqnz dh vksj lsjke ls
feyus tkrs gSa hksgyh gheyk dk ea
jke mudh fo}rk ls [kqLk vkSj Sdkpkjh
dsdk;y gSa tksgSa dk.Mds
rhljs l xZ ds 'yksd (27&33) ea
jke us guqeku dh dk.Dpkjh mnds
izkHkvo sKku vkSj O;kdj.k dh l Vhd
tkudkjh dh Hkfj vHkfj iz'kalk dhgS
vkSj dg fn;k fd ft l jkt k ds ikl
,Sk nwr gks mlds vl i Qy gksus dk
l oky gh ugha mBrk ('yksd 34)A
jke guqeku ds bl JsB xq.kksa ls bruk
izHkkfor Fks fd t c lezqnz us mldh
[kkst ds fy, pkjksa fn'kkvksa esa okuj Hksa
dh Vksfy;ka Hkst rks jke us viuh igpku
vxBwh fdl hvt c fd'dk esa vkdj
fl i Q guqeku dks gh nhA ,d mnwi uh
dk fdrus vkRefo'okl vkSj izHkko'kkyh
rjhds ls j[k ldrk gSa bldk ,d
vuBkuewk(l bqj dk.Mds l xZ 51
es) nh gS rc fn;k t c nwr gks jko.k
dks trk fn;k fd jke ls nqtpuh eky
ysdj nhus cMk eqgk ls fd;k gSA

ij Kku vkSj dfXrk ds bl
vuBs lxe guqeku dks dHkh vgalkj
gqvk vgalkj gks t;s rks fi Q dSk
nk; Hkko\ guqeku rks ges'kk fouez
vkSj Hkys u dhe frZ ij vkrs gSa
fouez brus fd t c nf{k.k l eqnz ykakus
dke dsSk vk;k rks dgus dks r,S;kj gh
ugha fd os mhs Nykak dj ikj dj
tk;saxs t c fd nwljs&nwljs okuj viuh

शक्ति की खूब बड़कें मार रहे थे। जब जाम्बबान ने जगाया तो जगे और एक ही छलांग में समुद्र पार कर गये। इतना बल, इतनी शक्ति इतना ज्ञान, इतनी बुद्धि, पर इतनी विनम्रता, इतनी अहंकारहीनता कि हनुमान के बारे में प्रसिद्ध हो गया कि उन्हें अपनी शक्ति तभी याद आती है, जब उन्हें उसकी याद दिलाये। जरा विनम्रता का आलम तो देखिये। समुद्र को एक ही कूद में पार कर लिया, राक्षसों को मार गिराकर लंका में घुस गये, वहाँ युद्ध करना पड़ा तो रावण के कई सेनापतियों सहित उसके एक पुत्र अक्षयकुमार का वध कर दिया, सीता को खोज निकाला, अशोक वाटिका उजाड़ दी, रावण को भरी सभा में फटकारने का साहस दिखाया, लंका जला दी और अक्षत वापस लौट आये। जब लौट आये तो राम से क्या कहा? कुछ नहीं, सिर्फ एक वाक्य- हे रामजी, सीता को खोज लिया गया 'नियतामक्षतां देवीं राघवाय न्यवेदयत्' (सुन्दरकाण्ड, सर्ग 64 श्लोक 42)। बस, बाकी बातें सब बाद में, पूछने पर और उतनी ही जितनी बतानी जरूरी थीं।

पवनपुत्र हनुमान के विराट व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए न यह कॉलम काफ॰ है, और न यह कलम। और बतायें भी किसे? उन पाठकों को जो पहले से ही हनुमान के चरित्र से सराबोर हैं? पर कभी-कभी लिखने वाला मजबूर होता है और अपने ऊपर ओढ़े कर्तव्य से संचालित होना ही पड़ता है उसे। इसलिए हनुमान के भोलेपन के दो उदाहरण दिये बिना हमारा भ्झी मन नहीं मान रहा।

दोनों प्रसंग सुन्दरकाण्ड के हैं। पहला है सर्ग 10 में तो दूसरा 13 में है। पहला प्रसंग। हनुमान सीता को खोजते हुए रावण के महल में जा पहुँचते हैं। वहाँ उन्होंने एक कक्ष में एक श्रेष्ठ सय्या पर पर सोई एक परमसुन्दरी स्त्री को (जो वास्तव में मन्दोदरी थी) देखा और खुश हो गये कि बस, खोज लिया सीता को। इसके बाद क्या हुआ? प्रसन्न हनुमान ने अपनी पूंछ को पटकना और चूमना शुरू कर दिया, थोड़ा चिंघाड़ने लगे, कूदने लगे, इधर-उधर फुदकने लगे, खम्भों पर चढ़ने उतरने लगे और एक वानर की तरह बरतने लग गये (सर्ग 10, श्लोक 54)। पर जल्दी ही उनकी अक्ल ने जोर मारा और सोचने लगे कि राम से वियुक्त सीता इस तरह आराम से नहीं सो सकती और बस फिर से लग गये सीता की खोज में।

दूसरा प्रसंग। सीता मिल नहीं रही और हनुमान निराश हो गये। सोचने लगे, जरा देखिये तो क्या-क्या सोचने लगे, कि अगर सीता नहीं मिलीं तो राम अपने प्राणों का परित्याग कर देंगे। राम जीवित नहीं रहे तो लक्ष्मण भला क्यों जीवित रहेंगे? अपने दोनों भाइयों की मृत्यु का समाचार पाकर भरत नहीं बचेंगे और शत्रुघ्न भी मर जायेंगे। अपने चारों पुत्रों की मृत्यु के बाद क्या कौसल्या, सुमित्रा, कैकयी ये तीनों मातायें जीवित रह पायेंगी। फिर राम के देहावसान के बाद वानरराज सुग्रीव भी मर जायेंगे। नहीं बचे तो फिर उनकी पत्नी तारा और पुत्र अंगद भी प्राण त्याग देंगे। और इस तरह क्रमश: सारे अयोध्या और किष्किंधावासी भी अपने प्राणों को त्याग देंगे। अपनी भयानक कल्पनाओं को पता नहीं भोले हनुमान ने कहाँ तक खींच दिया। सोच लिया कि मैं तो वानप्रस्थी हो जाऊँगा या जलती हुई आग में प्रवेश कर जाऊँगा। फिर सोचने लगे कि क्यों न रावण का ही वधकर डालूं, जो सारे झगड़े की जड़ है? बस फिर क्या था, कर डाला संकल्प कि जब तक सीता को न ढूंढ लूंगा, इस लंका को ही बीनता रहूंगा और इस संकल्प के बाद के सीधे अशोकवाटिका की दीवार को फलांदने लग जाते हैं। कैसे लगते हैं ये भोले हनुमान? कुटिल, छली और प्रपंची हृदय क्या कभी इतना भोला हो सकता है? अगर नहीं तो यह भी इतना ही तय है कि ऐसा हृदय ही दास्यभाव अपना सकता है। (साभार नवभारत टाइम्स)

पूज्य पिताश्री की.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

बताते हुए समझाते तथा उन्हें उलझनों एवं परेशानियों से उबारते। मेरे जीवन में जब कभी भी किसी प्रकार की छोटी-मोटी कठिनाईयाँ आई उसे उन्होंने अपने विशद् ज्ञान एवं अनुभवों से दूर करके मेरा मार्गदर्शन किया। उनके मार्गदर्शन में मुझे सदैव निर्विकार भाव से आगे बढ़ने एवं जनसेवा की प्रेरणा दी है। मुझे गीता सत्संग जाकर उनकी बातों की गहनता का अनुभव हुआ। वे पूजा-पाठ कर्मकाण्ड करने एवं कराने में विश्वास नहीं रखते थे। उनका मानना था कि भगवान अगर एक ही है तो विभिन्न धर्म, पंथ, प्रथाएं क्यों? यह तो केवल अलगाव एवं भटकाव ही फैलाएगा। ईश प्रार्थना करते समय वे कहा करते थे कि प्रभु से 'सुख सम्पत्ति घर आवे' मत मांगो, कहो कि 'शुभ सम्मति घर आवे' जो तुम्हें जीवन में ज्यादा सुख और शान्ति देगा। आप यह भी कहा करते थे कि 'सन्तन की सेवा' के स्थान पर 'अवलन की सेवा' अर्थात दुखियों की सेवा करने को कहते थे। इससे उनकी जीवन के प्रति सम्वेदन-शीलता का पता चलता है। आप कहा करते थे कि जीवन में आने वाली कठिनाईयों, समस्याओं और बीमारियों से कभी नहीं घबराना चाहिए और न ही हताश होना चाहिए। दुख बुरा नहीं है परन्तु दुखी होना बुरा है। जीवन में इसी से ही साहस, धैर्य और जीवन की यर्थाथता को समझने की शक्ति आती है। उन्होंने 'इच्छा काया माया जग उपजाया' को अपने जीवन में उतारा। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर बीमार हो गए थे। सन् 1977 में जब एमरजेंसी में ही चुनाव हुए थे तो वे चुनाव के निर्णय लेते-लेटे सुनते थे। इस चुनाव में कांग्रेस हार गई थी जिससे दुखी थे किन्तु शान्त थे। इसी वर्ष 16 मई 1977 में उन्होंने इस नश्वर देह को त्यागकर परमधाम की ओर प्रस्थान किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सावधान

भारी बरसात में कई सपने बिखरे

लिपुलेख सड़क कई जगह क्षतिग्रस्त

सोबला में हुआ है काफी नुकसान

खतरनाक बना हुआ है रातीगाड़ नाला

चोरगलिया मार्ग पर हो रही दिक्कत

स्वाला में मलबा आने से यात्रा चाल धीमी

जलमग्न हो गई हल्द्वानी की सड़कें

बाजपुर में जलभराव से भारी नुकसान

नयना गाँव में भयंकर भूस्खलन

नाकुरी के खेत खलिहान में मलबा

दाफा गाँव में जमीन धंसी, मकान टूटे

पूर्णागिरी मार्ग में मलबे से अवरोध

आलम दारमा गांव में भूस्खलन से खतरा

कोसी के उफान पर गर्जिया में दुकानें बही

मुनस्यारी-जौलजीबी मार्ग कैठीबैंड आफत

पि.हि.टीम

बरसात के कारण पर्वतीय मार्गों पर दिक्कत है। ऐसे दिनों में यात्रा करने वालों को बहुत ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है। भूस्खलन, बोल्डर गिरने, पानी भराव, भूधंसाव कारणों से यात्रा मार्गों पर खतरा बना हुआ है। ऐसे में कई सपने बिखरे हैं। इन्हें पूरा करने के लिये जूझना होगा।

भारी बरसात में लिपूलेख सड़क कई जगह क्षतिग्स्त है। धारचूला-लिपुलेख सहित कई सड़कों पर मलबा आने से यातायात बाधित हो रहा है। सोबला में काफी नुकसान हुआ है। गस्कू सड़क बन्द होने यात्रियों को यात्री सोबला में रुकना पड़ा। दारमा घाटी में सोबला के लागूथान नाले का जलस्तर बढ़ने से पूर्व प्रधान सुन्दर का मकान टूट गया। सोबला उमचिया सड़क पर 36 मीटर लम्ब 47 टन वजन का मोटर पुल भी टूट गया। खतरनाक बाढ़ बरकर आ रहे मलबा व बोल्डर में मकान टूटा, गनीमत है जनहानि नहीं हुई। सोबला-ढाकर, तवाघाट-लिपुलेख सड़क ठीक होने में समय लगेगा। इसी प्रकार व्यास घाटी का सम्पर्क भी तहसील मुख्यालय से कटा हुआ है। गस्सू में सड़क बन्द होने से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ा। मार्ग में फंसे यात्रियों को पांगला में रोका गया।

मलबा आने से थल-मुनस्यारी मार्ग भी आफत बन चुका है। हरड़िया और रतिगाड़ में मलबा आने से बार-बार दिक्कत हो रही है। नाचनी में विद्युत, पेयजल लाइनें टूटने से भी परेशानी बढ़ चुकी है। रतिगाड़ और हरड़िया का मलबा रामगंगा में पटने से नदी का जल प्रवाह दो मीटर तक बढ़ गया था, जिससे नाचनी बाजार तक भयभीत रही। भैंसखाल गांव में भू कटाव से खतरा दिखाई दे रहा है। दाफा गाँव में जमीन धंसने से कई मकानों में टूट हुई है। मकानों में गहरी दरार आने से भयभीत परिवारों ने रिश्तेदारों के घर में शरण ली है। बंगापानी तहसील की ग्रामसभा आलम-दारमा में भूस्खलन से मोहन सिंह धामी का मकान खतरे की जद में आ चुका है। ग्रामीणों ने पीड़ित परिवार को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया है। मुनस्यारी-जौलजीवी मोटर मार्ग में कैठी बैंड के पास आफत मची हुइ है। सड़क टूटने से यहाँ मार्ग बन्द हो गया।

अल्मोड़ा-हल्द्वानी राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित क्वारब क्षेत्र में लगातार भूस्खलन होने से खतरा बना हुआ है। बार-बार मलबा हटाने बाद भी अचानक मलबा आते रहने से यातायात बाधित हो रहा है।

हल्द्वानी के गौला नदी के उफान पर आते ही गौलापुल में जारी कार्य में अवरोध है और अगले आदेश तक पुल होते हुए यातायात रोका गया है। हल्द्वानी चोरगलिया जाने के लिए बनभूलपुरा होते हुए रेलवे क्रासिंग वाला मार्ग संकरा होने से रोका गया है। पिछले साल बरसात में मार्ग का एक हिस्सा नदी में समा गया था। तब से इस जगह पर परेशानी बनी हुई है। चोरगलिया मार्ग पर नालों में मलबा आने से दिक्कत हो रही है।

चम्पावत जिले में बरसात का असर बेसुमान है। स्वाला में मलबा आने से यातायात बाधित हो रहा है। पिथौरागढ़-टनकपुर मोटर मार्ग पर भारतोली में जबर्दस्त मलबा अपने से बहुत दिक्कत हो रही है। टनकपुर में शारदा का जलस्तर बढ़ने से अलर्ट किया गया है। पूर्णागिरी मार्ग पर बाटनागाड़ में मलबा आने से अवरोध हो रहा है। इसी प्रकार बनबसा में बैराज पर रेड अलर्ट है। आपदा के कारण बाराकोट में होने वाला तहसील दिवस आयोजन स्थगित कर दिया गया। लोहाघाट-पिथौरागढ़ मुख्य राजमार्ग पर भारतोली के पास पहाड़ी से भारी मलबा आने से खतरनाक बना चुका है।

बागेश्वर जिले में भी बरसात भूस्खलन से आफत है। दुगनाकुरी तहसील में पानी से भरा खड़िया को खोदा गड्ढा फटने से खेत खलिहान मलबे से पट चुके हैं। रीमा क्षेत्र में खड़िया खदान के जोर ने प्रकृति के साथ जो अन्याय किया है उसका परिणाम बारिश में दिखाई दे रहा हे। पानी भरने से फटे गड्डे से पूरा रास्ता ही टूट चुका है।

नैनीताल हाइवे पर नयना गांव में भयंकर मलबा आने से खतरनाक हालत हो गये। हल्द्वानी-नैनीताल हाइवे पर दोगाव के पास भूस्खलन ने नई आफत कर रखी है। नैनीताल शहर में बिड़ला मार्ग पर बांज का पुरानी भारी पेड़ गिर गया। इस मार्ग पर भी टूटफूट हुई है। हल्द्वानी शहर में जलभराव से आफत मच चुकी है। बाजार सहित मोहल्लों में जिस तरह से नाली और नालों का पानी भर रहा है उससे व्यवस्था की पोल खुल रही है कि नालों पर कब्जे नहीं खुल सके हैं और पानी के रास्ते जाम हैं। कालाढूंगी रोड, नवाबी रोड, नैनीताल रोड, नहर कबरिंग रोड सभी जगह बेहिसाब पानी भर जाने से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नगर निगम ड्रेनेज सिस्टम दुरुस्त करने का दावा कर रहा है लेकिन बारिश में सारी पोल खुल चुकी है। हल्द्वानी, काठगोदाम में जिस तरह से थोड़ी सी बरसात में भी जलभराव हो रहा है वह शहर संवारने के पूरे सिस्टम पर सवाल खड़ा करता है।

मूसलाधार बारिश के चलते कोसी नदी का जलस्तर कई गुना बढ़ गया, जिसमें गर्जिया मन्दिर क्षेत्र में लगी दो कच्ची दुकानें तेज बहाव में बह गई। प्रशासन द्वारा कोसी किनारे लोगों को हटाया जा चुका है। साथ ही नदी किनारे रहने वाले स्थानीय निवासियों को मुनादी के जरिए सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया। कोसी बैराज के सभी दस गेटों को सिंचाई विभाग ने खोला है। बारिश में धनगढ़ी व पनोद नाला उफना गया ऐसे में रामनगर से यात्रियों को लेकर रानीखेत जा रही रोजवेज की बस फंस गई। जिसे जेसीबी की मदद से निकाला गया। रामनगर-काशीपुर की सीमा पर बहला नाले का उफनता पानी घरों में घुस गया।

जलभराव की समस्या से तराई ज्यादा परेशान है। लोवड़ा नदी में आई बाढ़ से बाजपुर के बेरिया रोड किनारे पीएसी पेपर मिल व गोपाल फूड्स कारखानों में करोड़ों का नुकसान हुआ है। नदी का पानी के बाद इन दोनों उद्योगों को बन्द करना पड़ा है। पर्वतीय क्षेत्रों में भारी बरसात के बाद बाजपुर में नदी-नालों के तीव्र वेग से कई जगह जलभराव हुआ। इन्दिरा कालोनी सहित कई जगह डीएम नितिन सिंह भदौरिया ने नुकसान का निरीक्षण किया। उधमसिंह नगर जिले के रुद्रपुर में कल्याणी नदी ने परेशान कर दिया। जलस्तर बढ़ने से जगतपुर, मुंखर्जी नगर में कई घरों को खाली करवाकर राहत शिविरों में भेजा गया है। महापौर ने निगम की चार टीमें काम पर लगाई हैं।

ज्योतिष की बातें- 242

21 अगस्त 2025 को शुक्र मित्रराशि से निकलकर शत्रुराशि कर्क में प्रवेश करेगा। कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं होगी अत: शुक्र अति निर्बल रहेगा। शुक्र भौतिक खुश, सांसारिक लाभ, सफलता, धन सम्पत्ति, वाह, वैवाहिक जीवन, प्रेम प्रकरण आदि का कारण होता है। फलदीपिका के अनुसार शुक्र गोचर चन्द्रमा से छठवें, सातवें और दसवें स्थानों पर शुभ होता है। साथ ही मकर और कुम्भ राशियों के लिए शुक्र योगकारक भी होता है। अत: अगले 24 दिन शुक्र अपने कारक विषयों में सभी राशियों को प्राय: सामान्य फल ही प्रदान करेगा।

23 अगस्त 2025 को सूर्य सायनमान से सिंह राशि में प्रवेश करेगा। शरद् ऋतु का प्रारम्भ हो जाएगा। आगामी दो महीनों में त्रिफला चूर्ण में थोड़ा चीनी मिलाकर सेवर करना स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 132

बादल फटना नैसर्गिक अथवा कृत्रिम

बादल फटने की घटनाएँ अब बरसात में पहाड़ों पर बहुत अधिक होने लगी हैं, जिसमें सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो जाने पर कुछ दिन मीडिया में हल्ला मचाया जाता है, तरह-तरह के कारण बताए जाते हैं, इसके बाद फिर सब शान्त होकर विकास फिर उसी गति से दौड़ने लगता है। पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों एवं विद्वानों के द्वारा इन भयंकर घटनाओं के पीछे जो कारण बताए गए हैं उसमें से संक्षेप में निम्नलिखित हैं।

1. पहाड़ों पर भी जंगलों का विनाश काफी तेजी से किया जा रहा है। जंगल काटकर बाग लगाए जा रहे हैं, आदि।
2. इस समय उत्तराखण्ड में सुरंगों का निर्माण बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है। नदियाँ अब सुरंगों में बह रहीं हैं। रेलयात्रा और बस यात्रा के लिए सुरंगों को खोद कर पहाड़ों को खोखला किया जा रहा है।
3. ऑल वेदर रोड और बहुत सी चौड़ी-चौड़ी सड़कें बनाने के लिये लाखों पेड़ों को काट दिया गया है। पहाड़ नंगे हो गए हैं।
4. पहाड़ों को काटने के लिये अब छैनी हथोड़ा नहीं बल्कि विस्फोटकों का उपयोग होता है जिससे कि पूरा का पूरा पहाड़ कमजोर पड़ जाता है, चकनाचूर हो जाता है।
5. टिहरी में विशालकाय बांध बनाने के बाद से पूरे उत्तराखण्ड का पर्यावरण असन्तुलित हो चुका है।

विकास के नाम पर जो होता है उसका उद्देश्य वास्तव में जनहित नहीं होता है बल्कि नेताओं का अपना सैकड़ों करोड़ों का कमीशन प्राप्त करना ही होजा है।

अन्तिम सत्य तो यही है कि राजा के पास कर्मो। का एक चौथाई फल धर्म शास्त्रों के अनुसार प्रजा को भी भोगना पड़ता है। **-ओंकार नाथ कोष्टा**

निर्माणाधीन हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट साइट पर भारी भूस्खलन

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड को ऊर्जा प्रदेश तो कहा गया लेकिन कभी इस सपने को साकार ही नहीं किया जा सका। स्थिति यह रही कि नदियों के रूप में राज्य की बहुमूल्य सम्पदा का इस्तेमाल सरकारें नहीं कर पायी और बढ़ती मांग के बीच विद्युत संकट राज्य के विकास पर भारी पड़ने लगा है। हालांकि कुछ परियोजनाएं हैं जो अब भी राज्य की उम्मीद बनी हुई हैं। पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड के लिए बड़े हाइड्रो प्रोजेक्ट हमेशा खतरे के रूप में देखे जाते रहे हैं। वैसे राज्य में टिहरी बांध के रूप में एशिया के सबसे बड़े प्रोजेक्ट को स्थापित किया गया है लेकिन इसके बाद पर्यावरण और भूगर्भीय वैज्ञानिक आधार पर ऐसे बड़े प्रोजेक्ट राज्य में पूरी तरह से रोके गए हैं। वैसे बड़े प्रोजेक्ट के रूप में कुछ दूसरी परियोजनाएं भी राज्य में बनी हैं।

जो ाीमठ में हेलंग के पास निर्माणा ाीन विष्णुगाड़ पीपलकोटी जलविद्युत परि-योजना की डायवर्जन साइट पर विगत देर रात एक बड़ा हादसा हुआ। जिसमें चट्टानें टूटने से 12 मजदूर घायल हो गए। कई मजदूरों ने भागकर अपनी जान बचाई। एचसीसी द्वारा संचालित इस डैम साइट पर उस वक्त करीब 200 मजदूर काम कर रहे थे। प्रशासन ने क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को और सख्त करने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने बताया कि घटना में 8 लोग घायल हुए हैं। 4 घायलों का टीएचडीसी चिकित्सालय में उपचार के लिए भर्ती करायाहै। जबकि 2 गम्भीर घायलों को स्वामी विवेकानन्द अस्पताल पीपलकोटी में उपचार किया जा रहा है। वही पीपलकोटी में ही एक व्यक्ति का प्लास्टर करवाया जा रहा है। जबकि एक गम्भीर घायलों को मेडिकल कालेज श्रीनगर रेफर किया गया। उत्तराखंड में ऊर्जा को लेकर इस संकट के बीच एक सवाल यह भी है कि यदि राज्य अपनी जरूरत की बिजली भी उत्पादन नहीं कर पा रहा है तो फिर इसे ऊर्जा प्रदेश क्यों कहते हैं। इसके पीछे की वजह वह नदियां और ग्लेशियर हैं ऐसी परियोजनाओं को लागू करने से पहले भूगर्भीय और पर्यावरणीय अध्ययन को और गम्भीरता से लेने की जरूरत है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

क्रैश बैरियर लगाने की मांग

थल/मुवानी। मुवानी-चिटगालगांव पर ओखलढुंगा के पास क्रैश बैरियर लगाने की मांग की जा रही है। इस स्थान पर एक ओर संकरी सड़क और दूसरी ओर गहरी खाई है। आवागमन करने वालों को कोई खतरा न हो इसलिये क्रैश बैरियर जरूरी है।

अल्मोड़ा में 28 से नन्दादेवी मेला होगा

अल्मोड़ा। सांस्कृतिक नगरी में नन्दादेवी मेला 28 अगस्त से 3 सितम्बर तक होगा। आयोजन को लेकर मन्दिर परिसर में हुई बैठक में कहा गया कि 209 वर्षों की परम्परा को भव्य रूप से मनाया जायेगा। मेले में समय विस्तार और बुजुर्गों को लाने की सुविधा पर भी सुझाव दिये गये।

कर्नल ऐरी नए कमांडिंग ऑफिसर

पिथौरागढ़। एनसीसी 80वीं वाहिनी के कमांडिंग आफिसर लेफ्टिनेंट बीएस तड़ागी सेना में 36 साल 5 माह की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हो गए हैं। लेफ्टिनेंट कर्नल देवेश सिंह ऐरी को कमांडिंग आफिसर बनाया गया है। समारोह में तड़ागी को विदाई के साथ ही ऐरी को जिम्मेदारी सौंपी गई।

कोटगाड़ी पहुंचे एलटी के चयनित अभ्यर्थी

पांखू। सात महीने से अपनी नियुक्ति का इन्तजार कर रहे एलटी शिक्षक के चयनित अभ्यर्थियों का धैर्य टूट चुका है। इन युवाओं ने न्याय की देवी कोटगाड़ी में जागर अर्जी लगाई है। कहा कि चयन से असन्तुष्टों की याचिका पर मामला लटका दिया गया है और सरकार की ओर से प्रभावी पैरवी नहीं की जा रही है।

कपकोट कालेज में विज्ञान संकाय शुरू

बागेश्वर। रा.स्ना.महाविद्यालय कपकोट में इस सत्र से बीएससी प्रथम सेमेस्टर के लिये प्रवेश शुरू हो चुके हैं। विज्ञान संकाय मान्यता के बाद इस क्षेत्र दूरस्थ इलाकों तक के विज्ञान में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को अवसर मिल पाएगा।

सीएम करेंगे नन्दा देवी मेला शुभारंभ

नैनीताल। नन्दादेवी मेले का शुभारम्भ मुख्यमंत्री पुष्करसिंह धामी करेंगे। रामसेवक सभा में मेले को को लेकर हुई बैठक के बाद महासचिव जगदीश बवाड़ी ने बताया कि 28 अगस्त से 5 सितम्बर तक नन्दा देवी महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिये सभी तैयारियां चल रही हैं। मां नन्दा सुनन्दा की मूर्ति निर्माण के लिये मंगोली गांव से कदली वृक्ष लाया जाएगा। मेला प्रांगण में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। विधायक सरिता आर्या ने बताया कि मुख्यमंत्री का आगमन प्रस्तावित है। पालिका की ओर से विशेष स्वच्छता अभियान की बात कही गई है।

धींगामुस्ती हो रही है नगर पालिका क्षेत्र टनकपुर में, तालमेल की कमी

चैयरमैन और ईओ के बीच क्या है?

समस्याओं का अम्बार, सभासदों का गुस्सा

सीए कैम्प कार्यालय भी कर चुका है पहल

भुगतान को लेकर ठेकदार बसरे, आरोप

टनकपुर। चम्पावत जनपद के मैदानी क्षेत्र टनकपुर का नगर पालिका क्षेत्र पूरी तरह से धींगामुस्ती का अड्डा बन चुका है। बड़ी मण्डी में सुमार टनकपुर का वातावरण संवरने का नाम ही नहीं ले रहा जबकि मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के कैम्प कार्यालय सहित लगातार उनका दौरा रहा है। हालात यह हैं कि नगर पालिका परिषद क्षेत्र ही समस्याओं का भण्डार हो चुका है। असल में पालिका के अध्यक्ष व ईओ के बीच तकरार की बात बेहद चर्चा में है। आँखिर ऐसी कौन सी बात है जिसका प्रभाव शहर के विकास में सीधा सा है? टनकपुर को संवारने के लिये शासन की ओर से हर प्रकार के सहयोग व सहायता के लिये कहा गया है। पूर्णागिरी मेला क्षेत्र का पहला पड़ाव टनकपुर अपने विकास को तड़प रहा है।

बताते चलें कि नगर निकाय चुनाव में सीट आरक्षित होने के बाद भाजपा ने विपिन कुमार को अपना प्रत्याशी बनाया था और सीएम धामी की कृपा से वह सफल भी रहे। जबकि पार्टी के भीतर उनका गहरा विरोध छाया हुआ था। खैर, चुनाव के बाद बोर्ड बन गया लेकिन 6 माह बीत जाने के बाद भी नगर पालिका परिषद की उपलब्धि शून्य है। पालिका के कर्मचारी भी आश्चर्य में हैं। रार-तकरार को देखते हुए सीएम कैम्प कार्यालय ने इसमें हस्तक्षेप किया, चैयरमैन और ईओ संग बैठक कर तरक्की के रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया।

बाद जस की तस है। ऐसे में पालिका के सभासदों ने मण्डलायुक्त दीपक रावत से भेंट कर नगर क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं के समाधान की बात की है। सभासद चर्चित शर्मा के नेतृत्व में शिष्टमण्डल ने आयुक्त को ज्ञापन दिया। बताया कि बोर्ड गठन के बाद से कुछ काम नहीं हो पाए हैं जबकि परेशान लोग टकटकी लगाए बैठे हैं। ज्ञापन देने वालों में वकील अहमद, बबीता वर्मा, दिलदार अली, पूर्व सभासद योगेश पाण्डे भी थे। भुगतान न होने से परेशान ठेकेदारों ने भी अपनी पीड़ा बताई है। रक्षाबन्धन त्यौहार के समय ठेकेदारों ने पालिकाध्यक्ष विपिन कुमार पर गम्भीर आरोप लगाते हुए धरना प्रदर्शन किया और डीएम को ज्ञापन भेजा। कहा कि अध्यक्ष ने अपना कैम्प कार्यालय घर पर बना रखा है और वहाँ जाने पर उन्होंने रुखे व्यवहार के साथ झिड़का जबकि अपने चहेतों का भुगतान के अलावा सभी को परेशान किया जा रहा है। भगवान जाने टनकपुर में कौन सी राजनीति चल रही है और कब तक सुनवाई होगी और पालिका क्षेत्र का विकास होगा।

चम्पावत में राजनीतिक उथल-पुथल शुरू

भाजपा पूर्व जिलाध्यक्ष दीप पाठक ने छोड़ी पार्टी

चम्पावत में राजनीतिक उथल-पुथल तेज हो चुकी है। पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष दीप पाठक ने पार्टी की प्राथमिकता से त्यागपत्र देते हुए अपनी पीड़ा प्रेस के समक्ष रखी। उन्होंने कहा कि पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं को उपेक्षित किया जा रहा है। श्री पाठक के पार्टी छोड़ने के बाद नई तरह की हलचल होने लगी है क्योंकि चम्पावत विधानसभा सीट में सीएम पुष्कर सिंह धामी की इंट्री के बाद ही इस प्रकार की शुरूआत हो चुकी थी। पूर्व विधायक और धामी के लिये अपनी सीट छोड़ने वाले स्व.कैलाश गहतोड़ी की टीम की जिस प्रकार शुरू में जुटी वह बाद में अन्दरखाने बिखरती चली गई और धामी की ताकत का असर हुआ कि दूसरे चेहरे बलवान दिखाई देने लगे। राजनीति के खेल में यही सब होता रहता है। महत्वाकांक्षा पाले कौन नेता कितना और क्या कर रहा है, इस बात पार्टी के रणनीतिकार और स्वयं धामी भी भली भांति जान रहे हैं। फिलहाल दीप पाठक को मनाने का सिलसिला भी जारी है।

प्रमुख और जिपं के लिये ताकत दिखाई

खुलेआम छीना-झपट अराजकता का माहौल

द्वाराहाट में पत्थरबाजी और बेतालघाट में गोली

नैनीताल सीट पर दुबारा चुनाव होगा

उत्तराखण्ड के त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में प्रमुख पदों के लिये नेताओं की ताकत के सामने पार्टियां भी बौनी हो गई। हालांकि सत्ता का दबदबा और संगठन का जोड़तोड़ अन्तत: भाजपा से जुड़े होने का लाभ दिलाने में सफल रहा है। नैनीताल जिपं पर दुबारा चुनाव होगा। हाईकोर्ट ने मामले में नाराजी दिखाई की इतनी बड़ी अराजकता हुई।

नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष पद पर खुलेआम छीना-झपट अराजकता का माहौल देखने को मिला। भाजपा कांग्रेस के बड़े नेताओं की तनातनी सोशल मीडिया पर भी लाइव देखने को मिली। नेपा प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, हल्द्वानी विधायक सुमित हृदयेश सहित तमाम बड़े नेता कांग्रेस के निर्वाचित सदस्यों के साथ डटे थे, इस बीच भाजपा की ओर से कुछ सदस्यों को जबरन ले जाने की बात कही गई और जमकर हंगामा हुआ। पूरे मामले को लेकर कांग्रेस ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और चारों ओर घपले से जुड़े नेताओं को लेकर भारी रोष है।

जोड़तोड़ के खेल में जिला पंचायत रुद्रपुर अजय मौर्य, चम्पावत से आनन्द सिंह अधिकारी, पिथौरागढ़ से जितेन्द्र प्रसाद निर्विरोध अध्यक्ष बने। इसी प्रकार ब्लाक प्रमुख खटीमा सरिता देवी भाजपा, मूनाकोट से नीमा वल्दिया निर्दलीय, चम्पावत से अंचला बोरा कांग्रेस, सल्ट से कंचन रावत कांग्रेस के सफल रहे। रामनगर जिपं प्रमुख संजय नेगी की पत्नी निर्दलीय मंजू नेगी बनी जबकि डीडीहाट में भाजपा गणित फेल हो गया और यहाँ निर्दलीय नरेन्द्र धामी ब्लाक प्रमुख बने हैं।

सदस्यों को अपनी ओर करने के लिये जिस प्रकार की ताकत इस चुनाव में दिखी उसने आने वाले दिनों की राजनीति भी तय होनी है। हल्द्वानी ब्लाक प्रमुख मंजू गौड़ निर्दलीय निर्वाचित हो गई। इसी प्रकार भीमताल ओखलकाण्डा ब्लाक में के.डी.रुवाली ने गद्दी संभाली। इन दोनों जगह बागी तेवर दिखाने वालों को भाजपा संगठन ने संभाल लिया। बेतालघाट से अंकित साह ब्लाक प्रमुख बने। सितारगंज ब्लाक में भाजपा के उपकार सिंह निर्विरोध चुने गये। इसी प्रकार काशीपुर ब्लाक में चन्द्रप्रभा, खटीमा ब्लाक में सरिता राणा निर्विरोध प्रमुख बने। सल्ट सीट पर पूर्व विधायक रणजीत रावत की पुत्रबधू कंचन और ताकुला से कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या के भाई की पत्नी मीनाक्षी ब्लाक प्रमुख निर्विरोध हो गई। गंगोलीहाट में कांग्रेस और बेरीनाग में भाजपा की बाजी रही। लोहाघाट में महेन्द्र ढेक और मुनस्यारी में डॉ.कविता जगत महर प्रमुख बने। टिहरी मे भी नाम वापसी के कमाल के बाद इंशिता सजवाण तय हो गई। द्वाराहाट से कांग्रेस की डॉ.आरती किरौला, चौखुटिया से भाजपा की चेतना नेगी, भिकियासैंण से सतीन नैनवाल प्रमुख बने। अल्मोड़ा जिपं अध्यक्ष हेमा गौड़, भीमताल के प्रमुख डॉ. हरीश बिष्ट बने। कनालीछीना में महिमन सिंह कन्याल ब्लाक प्रमुख बने हैं।

डोभाल के पिता की याद में बनेगा पार्क

पौड़ी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के पैतृक गांव पौड़ी में उनके पिता मेजर गुणानन्द डोभाल की स्मृति में पार्क बनाया जायेगा। सहकारिता मंत्री धनसिंह रावत ने पार्क का शिलान्यास करते हुए कहा कि स्मृति पार्क मात्र एक हरित स्थल नहीं बल्कि राष्ट्रभक्ति, बलिदान और प्रेरणा का जीवन्त प्रतीक बनेगा।

गौरी रानीखेत की संयुक्त मजिस्ट्रेट

रानीखेत। सुरम्य नगरी रानीखेत की कमान नवनियुक्त आईएएस गौरी प्रभात ने संभाली है। उन्हें पूर्व में संयुक्त मजिस्ट्रेट रहे राहुल आनन्द के देहरादून तबादले के बाद रानीखेत का मजिस्ट्रेट बनाया गया है। उल्लेखनीय है कि प्रशिक्षण अवधि पूर्ण होने के बाद गौरी प्रभात की यह पहली नियुक्ति है। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित सेंट स्टीफन्स कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर टॉपर गौरी की यूपीएससी परीक्षा 2022 में ऑल इण्डिया 42वीं रैंक थी।

परिक्रमा

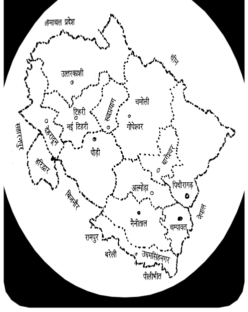

ऋषिकेश-हरिद्वार कॉरिडोर प्रस्तावित

हरिद्वार। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सनातन संस्कृति का सम्पूर्ण विश्व में व्यापक प्रचार प्रसार हो रहा है। राज्य सरकार देवभूमि की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं सम्वर्धन की दिशा में निरन्तर कार्य कर रही है। ऋषिकेश हरिद्वार कॉरिडोर का निर्माण कराया जाना भी प्रस्तावित है। इससे धर्मनगरी हरिद्वार काशी और अयोध्या की भांति अपने भव्य स्वरूप में नजर आयेगी।

लोहाघाट संघर्ष समिति के मुद्दे

लोहाघाट। लोहाघाट विकास संघर्ष समिति ने नगर की समस्याओं को लेकर बैठक की। विपिन गोरखा की अध्यक्षता में हुई बैठक में कहा गया कि जल संस्थान सालभर पानी नहीं देता है और जल कर वसूली होती है। शहर की नजूल भूमि पर चर्चा करते हुए कहा कि इसे फ्रीहोल्ड कराने के लिये जुटना चाहिये। इसके अलावा सीवर ट्रीटमेंट प्लान्ट, शहर में स्कूल खुलने और बन्द होने के समय सम्बन्धित मार्गों पर सुरक्षा की बात हुई।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

देश-विदेश में अलख जगाने वाले भातरखण्डे में करोड़ों की वित्तीय अनियमितता

दो विभागाध्यक्ष समेत सात लोग गिरफ्तार, खुल रही हैं परतें

विद्यापीठ की ख्याति देखते हुए कालेज को भातरखण्डे संगीत संस्थान अभिमत विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता दे दी गई और नये सिरे से जम-जमाव हुआ था

ताल वाद्य के विभागाध्यक्ष मनोज मिश्रा एमबीपीजी हल्द्वानी व रा.स्ना.महाविद्यालय रानीखेत भी रहे हैं

पि.हि.प्रतिनिधि

लखनऊ/हल्द्वानी। देश-विदेश में भारतीय शास्त्रीय संगीत की अलख जगाने वाले भातखण्डे में करोड़ों की वित्ती अनियमितता का मामला चल रहा है। बताया जा रहा है कि इस बनी बनाई धरोहर को चाट खाने के लिये गिद्ध दृष्टि लग चुकी थी, पूरा मामला क्या है यह तो जाँच पड़ताल में पता चलेगा। फिलहाल जिस प्रकार की सूचनाएं मिल रही हैं वह बेहद चौंकाने वाली हैं कि सुर-ताल पर ध्यान लगाने वालों का ध्यान कैसे भटक गया। यदि वह पाकसाफ हैं तो भगवान उनकी रक्षा करें और यदि थोड़ा भी कुदृष्टि थी तो उसकी सजा मिल ही जाएगी। मामल में लखनऊ केशरबाग स्थित भातखण्डे संगीत संस्थान अभिमत विश्वविद्यालय के नृत्य विभाग और ताल वाद्य के दो विभागाध्यक्षों समेत सात लोग गिरफ्तार हो चुके हैं। तीन करोड़ की वित्तीय अनियमितता में ये लोग वांछित बताये जा रहे हैं।

बताते चलें कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के उद्धारक महान आचार्य पंडित विष्णुनारायण भातखण्डे ने जिस मैरिस म्यूजिक कालेज की स्थापना लखनऊ में की थी, उसको संवारने के लिये देश के नामी लोग इससे जुड़े। घरानेदार उस्तादों ने यहाँ शिक्षक की भूमिका निभाई और इसके प्रथम प्राचार्य मूर्धन्य श्रीकृष्ण नारायण रतंनजनकर रहे। संगीत रचनाओं के महान वाग्येकार रतंनजनकर के बाद विद्वान पं. गोविन्द नारायण नातू इसके प्राचार्य रहे। इस प्रकार की परम्पराओं के बीच लखनऊ के बादशाह और शौकीन मिजाज लोगों की छाया इसको आगे बढ़ाती रही। इस संस्थान बाद में भातखण्डे संगीत विद्यापीठ के रूप में देश-विदेश में शिक्षा के प्रचार प्रसार का काम करने लगा। इसकी कक्षाओं में गायन, वादन, नृत्य की जो लहरियां गूंजती वह अनगिनत प्रतिभाओं को दुनिया के सामने ला सकीं। संगीत की तमीज बताने वाले भातरखण्डे संस्थान की बढ़त-चलत को देखते हुए इसे विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। जबकि भातखण्डे संगीत विद्यापीठ का प्राचीन प्रचलन अपनी जगह जारी है और इसके समर्पित लोग इसे बनाए हुए हैं। दूसरी ओर भातखण्डे संगीत संगीत संस्थान अभिमत विश्व विद्यालय में विवि में जो तानाबान बना गया उसमें कुलपति से लेकर प्रोफेसर, सहा.प्रोफेसर सहित अन्य पदों पर भर्ती हुई। इस कांटछांट में भातखण्डे के वह दिन इतिहास बन गये जब उस्तादों की मिठास और नखरे न्यारे थे। चूंकि यह विश्वविद्यालय का नक्शा बन चुका है तो यहाँ हुई नियुक्तियों में तमाम चेहरे बदल गये। कई उलझन भरी सूचनाएं यत्र-तत्र सुनाई देने लगी लेकिन सबने माना कि संगीत के लोग हैं, ठीक ही कर रहे होंगे लेकिन पानी सर से ऊपर हो चुका था।

सीबीसीआईडी ने भातखण्डे संगीत संस्थान अभिमत विश्वविद्यालय के नृत्य विभागाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र दत्त बाजपेई व ताल वाद्य के मनोज कुमार मिश्रा समेत सात आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। मामले में आरोपित पूर्व कुलपति प्रो. श्रुति सडोलीकर काटकर की गिरफ्तारी पर स्टे हैं। इन सभी पर 3.31 करोड़ की वित्तीय अनियमितता का आरोप था। शासन के आदेश पर पिछले साल जनवरी में सीबी सीआईडी ने जाँच शुरू की थी।

सीबीसीआईडी ने ने विगत दिवस रात्रि को अचानक इस मामले में कार्रवाई की। ज्ञानेन्द्र बाजपेयी और मनोज मिश्रा के अलावा गिरफ्तार लोगों में निजी फर्म के कर्मचारी मो.शोएब, कुन्दन सिंह, सुरेश सिंह, विनोद कुमार मिश्र व जुगल किशोर वर्मा हैं। बताया जाता है कि पूर्व कुलपति श्रुति को भी गिरफ्तार करने के लिए टीम गई थी लेकिन वहाँ पहुँचने पर पता चला कि उनकी गिरफ्तारी पर अभी स्टे लगा हुआ है। इस चर्चित मामले में 5 मार्च 2021 को तत्कालीन कुलपति डॉ. लवकुश द्विवेदी ने कैसरबाग कोतवाली में एफआईआर कराई थी।

बताया जा रहा है कि भातखण्डे में वित्तीय अनियमितता की शिकायत मिलने पर राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल ने जाँच के आदेश दिए थे। इसके बाद एफआईआर के आदेश हुए थे। जनवरी 2024 में सीबीसीआईडी की जाँच में खुलासा हुआ कि भातखण्डे की पूर्व कुलपति श्रुति सडोलीकर, तत्कालीन आहरण वितरण अधिकारी और बजट जारी करने वाले कर्मचारियों ने शासन के नियमों को दरकिनार कर अनियमितता बरती। इसके साथ मिलीभगत में 12 फर्मो के अधि कारी कर्मचारी भी रहे। इन लोगों ने तीन करोड़ 31 लाख 13 हजार 607 की अनियमितता की।

भातखण्डे के दो वरिष्ठ शिक्षकों की गिरफ्तारी से अफरातफरी मच गई है। माना जा रहा है कि एक सेवानिवृत्त और मौजूदा शिक्षक पर भी कार्रवाई की तलवार है। 2021 में मुकदमे के बाद वित्तीय अनियमितता की फाइल ठण्डे बस्ते में थी। जाँच सीबीसीआईडी को सौंप दी गई। जाँच के दायरे में पूर्व कुलपति श्रुति सडोलीकरण काटकर के साथ कई शिक्षक और कर्मचारी थे। इसमें नृत्य विभागाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र दत्त बाजपेई और ताल वाद्य विभागाध्यक्ष मनोज मिश्रा की गिरफ्तारी ने अन्य की मुश्किलें बढ़ा दीं। पूरी छानबीन में कितना कुछ हुआ है यह आने वाले दिनों में पता चलेगा।

इस बड़े मामले की लपेट में तबला वादक मनोज मिश्रा के लिप्त होने से उत्तराखण्ड में खासा चर्चा है क्योंकि मनोज मिश्रा की संगीत में पहली नियुक्ति हल्द्वानी के मोतीराम बाबूराम राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी में हुई थी। अपनी उस्तादी के अलावा युवा मनोज ने जिस प्रकार से सम्पर्क बढ़ाए वह बेहद चर्चा में थे। एमबीपीजी कालेज के संगीत विभाग में तब डॉ. उषा अग्रवाल गायन सिखाती थीं और तबले के उस्ताद मनोज यहाँ आ चुके थे। विद्यार्थियों में भी कौतुहल था कि संगीत का विभागाध्यक्ष कौन है? फिलहाल कुछ वर्ष तक यह सिलसिला चला, इस बीच मनोज मिश्रा के हल्द्वानी शहर में कुछ चेले बना चुके थे और चर्चा में रहे। संगीत प्रेमियों के बीच एक माहौल उन्होंने बनाया था कि बनारस के उस्ताद हैं और जैसा कि होता भी है बनारस या लखनऊ से कोई भी किसी जगह जाता है तो सामान्यतया मान लिया जाता है कि अब उस्ताद आया है। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत स्थानान्तरण होने के बाद तो वह और भी ज्यादा चर्चा में रहे। अब इन दोनों जगहों पर उनका मोह बना हुआ था। समय के साथ लखनऊ में भातखण्डे संस्थान में हुई नियुक्ति में यह वहाँ चले गये लेकिन इनके मोह की चर्चा थमी नहीं थी। समय कुछ और आगे बढ़ा तो सिर्फ इतना सुनाई देने लगता था कि मिश्रा जी अब लखनऊ में जम चुके हैं। अब जबकि भातखण्डे में सीबीसीआईडी की जाँच के बाद हड़कम्प मचा है फिर से तबला के जानकार मनोज मिश्रा चर्चा भी कम नहीं है। संगीत प्रेमी चाहते हैं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की का परचम बरकरार रहे इसमें दाग-धब्बे न लगें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पहाड़ के कपाल में लिखी है आपदा

पहाड़ के कपाल में लिखी है आपदा। इस बार का सावन श्राप के रूप में दिखाई दे रहा है जब बादल फटने से तबाही मची। उत्तरकाशी के धराली में खीर गंगा में मलबे के साथ तबाही ने हाहाकार मचाया, जिसके घाव दिखाई दे रहे हैं। धराली में 45 होटल और रिजार्ट के मलबे में दबे हैं या बह चुके हैं। कर्ज लेकर बनाए गए काटेज मलबा बन चुके हैं। इसके बाद थलीसैंण के चौथन क्षेत्र में बांकुड़ा, जैंती एवं पाबौं ब्लाक के सैंजी गाँव में बादल फटने की दु:खद घटना हुई।

उत्तरकाशी जिला मुख्यालय से 70 किमी दूर धराली गाँव इस आपदा में बुरी तरह घायल हुआ जिसके निशान दिखाई दे रहे हैं। 5 अगस्त की दोपहर में बादल फटने से खीरगंगा नदी में सैलाब उमड़ने लगा। इससे थराली का मुख्य बाजार तबाह हुआ। इस हाहाकार की सूचना दुनियाभर में थी और आपदा बचाव राहत टीम मौके पर आई, जिसने करीब 150 लोगों को सुरक्षित किया। इस बीच चार की मौत हो चुकी थी और करीब 35 लापता बताए जा रहे थे। बाद में दो शव और मिले। सेना, आईटीबीपी, एसडी आरएफ की टीमों ने हेलीकाप्टर से खोज और बचाव कार्य करते हुए मलबे में फंसे लोगों को रेस्क्यू कर निकाला। हर्षिल में आपदा में सेना के 9 जवान लापता बताये जा रहे हैं जबकि 11 घायल जवानों को रेस्क्यू कर एयरलिफ्ट किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह सहित हर बड़े नेता ने इस हादसे पर दु:ख प्रकट करते हुए तत्काल सहायता को कहा। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी अपनी आन्ध्र प्रदेश यात्रा रद्द कर लौटे और आपदा से हुए नुकसान का जायजा लिया।

आपदाओं से गुजर रहे उत्तराखण्ड ने हमेशा अपने दु:ख को सहकर भी उल्लास ही मनाया है। इन दिनों भी ऐसा हो रहा है जब चारों ओर लोकोत्सव जारी हैं। धराली की तबाही की याद के साथ पीड़ित लोग उठने की कोशिश रहे हैं। उन्हें याद है तबाही के दिन हर्षिल घाटी में तीन नालों में बादल फटे थे। धराली में खीरगंगा की तबाही के अलावा हर्षिल के समीप तेलगाड़ और सुबकी के समीप अवना बुग्याल के पास बादल फटा। इसमें हर्षिल हेलीपैड मलबे में बदल गया और भागीरथी में झील बन गई।

धराली में हुई हानि के अलावा बारिश का असर मैदानी क्षेत्रों में भी है। हरिद्वार में हर की पैड़ी स्थित भीम गोडा मन्दिर के पास भूस्खलन हुआ, जिसमें कई श्रद्धालु बला-बाल बचे।

थलीसैंण के चौथन क्षेत्र में बांकुड़ा, जैंती एवं पाबौं ब्लाक के सैंजी गाँव में आपदा से भारी नुकसान हुआ। बांकुड़ा गाँव में 5 नेपाली मजबूरों के बहने की सूचना है।

पौड़ी में मूसलाधार बारिश से बुरासी गाँव में भूस्खलन ने तबाही मचाई। यहाँ मलबे में दबने से दो सगी बहनों की मलबे में दबकर मौत हो गई। मूललाधार बारिश के कारण खेतों का पानी मलबे के साथ गाँव के मकानों की ओर बहने लगा। पाबौं ब्लाक के बुरांशी में हादसे के बाद प्रशासनिक टीमें मौके के लिये रवाना हुई लेकिन पुल टूट जाने से राहत कार्य में देरी हुई।

हालातों को देखते हुए प्रशासन ने पौड़ी हाईवे पर कोटद्वार से दुगड्डा के बीच कई जगह डेंजर जोन बनने पर रात के समय यातायात प्रतिबन्धित कर दिया है। यहाँ सिद्धबली मन्दिर के पास पहाड़ से सवारियों से भरे मैक्स वाहन में बोल्डर गिरने से दो लोगों की मौत हो चुकी है और 6 घायल हो गये। बदरीनाथ हाईबे पर बड़ी चट्टान टूटकर गिर पड़ी जिससे सैकड़ों यात्री दोनों ओर फंसे रहे।

कपाल पर लिखी आपदा के बाद भी दुनियादारी में हौंसला रखना होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

समस्त देशवासियों को

79वें स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

नये भारत का नया उत्तराखण्ड

महिला सशक्तिकरण

हाउस ऑफ हिमालयाज ब्रांड से उत्तराखण्ड महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार जैविक और प्राकृतिक उत्पादों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार उपलब्ध। को-ऑपरेटिव बैंकों और सहकारी समितियों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण। मुख्यमंत्री अंत्योदय निःशुल्क गैस रिफिल योजना के तहत राज्य के करीब पौने दो लाख गरीब परिवारों को साल में 3 सिलेंडर मुफ्त रिफिल। मुख्यमंत्री सशक्त बहना उत्सव योजना का हुआ शुभारंभ।

बड़े निर्णय-बड़े प्रभाव

समान नागरिक संहिता, सशक्त भू-कानून, राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 30% क्षैतिज आरक्षण, राज्य आंदोलनकारियों के लिए सरकारी नौकरियों में 10% एवं सख्त धर्मान्तरण विरोधी कानून, सख्त नकल विरोधी कानून एवं दंगारोधी कानून हुआ लागू। राज्य में साढ़े 6 हजार एकड़ से अधिक सरकारी भूमि अतिक्रमण से मुक्त।

युवा-शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार

बीते 4 वर्षों में 23 हजार से ज्यादा युवाओं को मिली सरकारी नौकरी। राज्य में बेरोजगारी दर में 4.4 प्रतिशत की आई कमी। मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत अब तक 35 हज़ार लोगों ने शुरु किया स्वरोजगार। नई शिक्षा नीति लागू करने वाला देश का पहला राज्य बना उत्तराखण्ड। उधम सिंह नगर के किच्छा में एम्स की सैटेलाइट सेंटर का निर्माण कार्य गतिमान। राज्य में 207 प्रकार की पैथोलॉजी जांच मुफ्त। अटल आयुष्मान योजना के तहत हर परिवार को मिल रहा हर साल ₹ 5 लाख तक का मुफ्त इलाज।

सैनिकों का सम्मान

राज्य सरकार द्वारा शहीद सैनिकों के परिजनों को मिलने वाली अनुग्रह अनुदान राशि को बढ़ाकर किया गया 50 लाख रुपये। परमवीर चक्र विजेताओं की अनुग्रह राशि को 50 लाख से बढ़ाकर किया गया डेढ़ करोड़। देहरादून में सैन्य धाम का हो रहा निर्माण कार्य।

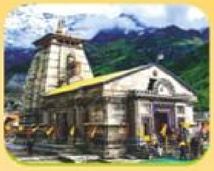

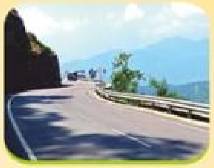

उत्तराखण्ड लिख रहा इतिहास

नीति आयोग द्वारा सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) रैंकिंग में उत्तराखण्ड देश में प्रथम स्थान पर। राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड ने 103 पदक प्राप्त कर नया रिकार्ड बनाया। प्रदेश में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए नई सौर ऊर्जा नीति, की गई तैयार। सतत प्रयासों से राज्य की जी.एस. डी.पी. में 1.3 गुना और प्रति व्यक्ति आय में 11.33 प्रतिशत की हुई बढोतरी। जीएसटी संग्रहण में 14 प्रतिशत की वृद्धि। सौभाग्य योजना के तहत 2.5 लाख हजार परिवारों को निःशुल्क विद्युत कनेक्शन किए गए प्रदान।

विरासत का संरक्षण

केदारनाथ धाम का दिव्य और भव्य पुनर्निर्माण। बदरीनाथ धाम में मास्टर प्लान के तहत कार्य गतिमान। हरिपुर कालसी में यमुना तीर्थ स्थल का होगा निर्माण। हरिद्वार-ऋषिकेश कॉरिडोर, शारदा कॉरिडोर का होगा निर्माण। मानसखण्ड मंदिर माला मिशन के तहत प्रथम चरण में 16 पौराणिक मंदिरों को किया जा रहा विकसित। महासू मन्दिन्दिर, हनोल के मास्टर प्लान को दी गई मंजूरी।

पर्यटन

उत्तराखण्ड के जखोल, सूपी, हर्षिल और गुंजी गांवों को भारत सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम के रुप में पुरस्कृत किया गया। वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अन्तर्गत सीमांत के 51 गांवों का चयन कर, किया जा रहा सुनियोजित विकास। राज्य में पहली बार शीतकालीन यात्रा का हुआ शुभारंभ। राज्य में अब तक 4 हजार से अधिक होमस्टे पंजीकृत।

कनेक्टिविटी

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे से दिल्ली और देहरादून के बीच यात्रा केवल 2.5 घंटे में पूरी होगी। गौरीकुण्ड से केदारनाथ एवं गोविन्दघाट से हेमकुण्ड साहिब तक रोपवे निर्माण कार्य को मिली केंद्र सरकार से स्वीकृति। पिथौरागढ़ से पंतनगर, दिल्ली, देहरादून तक शुरु हुई उड़ान सेवा। ऋषिकेश - कर्णप्रयाग रेलवे परियोजना का कार्य तेजी से गतिमान। नैनीताल, बागेश्वर, मसूरी, चंपावत, गौचर, श्रीनगर, चिन्यालीसौड़, मुन्स्यारी, पिथौरागढ़ और अल्मोड़ा को हेली सेवा से जोड़ा गया। टनकपुर-बागेश्वर रेललाईन पर सर्वे का कार्य हुआ पूरा। उत्तराखण्ड को केंद्र से दो वंदे भारत ट्रेन की मिली सौगात।

उद्योग एवं निवेश

एमएसएमई नीतिः नए औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन। ऊधमसिंह नगर के खुरपिया फॉर्म में भारत सरकार द्वारा स्मार्ट इंडस्ट्रियल टाउनशिप स्वीकृत। इन्वेस्टर्स समिट में 3.5 लाख करोड़ के एमओयू, 30 निवेश अनुकूल नई नीतियां, अब तक लगभग 1 लाख करोड़ की हुई ग्राउंडिंग।

बड़े आयोजन

- ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023
- जी-20 सम्मेलन 2023
- 38वें राष्ट्रीय खेल 2024
- अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी उत्तराखण्डी सम्मेलन - 2025
- विश्व आयुर्वेद कांग्रेस
- अंतर्राष्ट्रीय एक्सपो - 2024 का राज्य में हुआ सफल आयोजन।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)